Downloaded from www.studiestoday.com

गद्य-खण्ड

प्रेमघन की छाया -स्मृति

रामचन्द्र शुक्ल

पाठ परिचय – 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का एक संस्मरणात्मक निबन्ध है। प्रस्तुत निबन्ध में शुक्ल जी ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अपने प्रारंभिक रूझानों का वर्णन किया है। परिवार के साहित्यिक परिवेश, मित्र-मंडली के प्रभाव एवं प्रेमघन के सम्पर्क में आने से वे किस प्रकार साहित्य-रचना और प्रवृत्त हुए, उन्होंनें इसका भी वर्णन किया है।

स्मरणीय बिन्दु

❑ लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पिता फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। वे पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे। फारसी कवियों की उक्तियों को हिन्दी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था। वे प्राय: रात को घर के सब लोगों को एकत्र करने रामचरितमानस और रामचन्द्रिका पढ़कर सुनाया करते थे। भारतेंदु जी के नाटक उन्हें बहुत प्रिय थे। लेखक 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक के नायक राजा हरिश्चन्द्र तथा लेखक भारतेंदु हरिश्चन्द्र को एक ही समझता था। फलस्वरूप भारतेंदु जी के प्रति लेखक के बालमन में एक अपूर्व मधुर भावना जागृत हो गई थी।

❑ जब आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आठ वर्ष के थे, तब उनके पिता का तबादला राठ तहसील से मिर्जापुर हो गया। उन्हें पता चला कि भारतेंदु मंडल के प्रसिद्ध कवि उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' पास ही कहीं रहते हैं। शुक्ल जी के मन में उनके दर्शन की अभिलाषा उत्पन्न हुई। साथी बालकों की मंडली के साथ वह डेढ़ मील का सफर तय करके चौधरी साहब के मकान में सामने पहुँचे। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से ढका हुआ था, बीच-बीच में खम्भे और खाली जगह थी। काफी इंतजार के बाद उन्हें चौधरी साहब की एक झलक दिखाई दी। उनके बाल बिखरे हुए थे तथा एक हाथ खम्भे पर था। कुछ ही देर में यह छवि आँखों से ओझल हो गई। यही थी 'प्रेमघन' की पहली झलक।

❑ समय के साथ-साथ हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर लेखक का रूझान बढ़ता गया। उनके घर में जीवन भारत प्रेस की पुस्तकें आती थी। वे पं॰ केदारनाथ जी पाठक के पुस्तकालय से लाकर पुस्तकें पढ़ा करते थे। शुक्ल जी एक बार किसी बारात में शामिल होने काशी गए थे। वहाँ घूमते हुए उन्होंनें पं. केदारनाथ जी को एक घर से निकलते देखा। यह पता चलने पर कि

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

वह मकान भारतेंदु जी का है, शुक्ल जी बड़े प्रेम, कुतूहल एवं भावनाओं में लीन होकर उस मकान को देखने लगे। पाठक जी लेखक की यह श्रद्धा और प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न हुए तथा दूर तक उनके साथ बातचीत करते हुए गए। यहीं से पाठक जी और शुक्ल जी में गहरी मित्रता हो गई। इस प्रकार भारतेंदु जी के मकान के नीचे पं. केदारनाथ जी का लेखक के भावुक हृदय से परिचय हुआ जो बाद में गहरी दोस्ती में बदल गया।

- 16 वर्ष की उम्र तक लेखक की समवयस्क हिन्दी-प्रेमियों की एक मंडली बन गई थी, जिनमें प्रमुख थे - श्रीयुत् काशीप्रसाद जी जायसवाल, बा॰ भगवानदास जी हालना, पं॰ बदरीनारायण गौड़, पं॰ उमाशंकर द्विवेदी।
- लेखक जिस स्थान पर रहता था, वहाँ अधिकतर वकील, मुख्तारों तथा कचहरी के अफसरों और अमलों की बस्ती थी। लेखक की मित्र मंडली की बातचीत प्रायः लिखने-पढ़ने की हिंदी में हुआ करती थी जिसमें निस्संदेह इत्यादि शब्द आया करते थे। बस्ती के उर्दूभाषी लोगों को उनकी बोली अनोखी लगती थी। उन्होनें इस मंडली का नाम ‘ निस्संदेह’ रख दिया था।
- चौधरी साहब भारतेंदु मंडल के प्रसिद्ध कवि थे। वे पुराने एवं प्रतिष्ठित कवियों में से थे। उनके रहन सहन और व्यवहार से उनकी रईसी प्रकट होती थी। उनके संवाद सुनने लायक होते थे। उनकी बातचीत का अंदाज निराला था। उनको सुनने की जिज्ञासा हमेशा लेखक के मन में बनी रहती थी। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वरिष्ठ एवं अनुभवी होने के कारण लेखक तथा उसके मित्र चौधरी साहब को एक पुरानी चीज समझा करते थे परन्तु चौघरी साहब के प्रति प्रेम एवं आदर का भाव सदैव बना रहता था तथा उन्हें सुनने की इच्छा निरंतर बनी रहती थी। अतः इस पुरातत्व की दृष्टि से प्रेम और कुतुहल का एक अद्‌भुत मिश्रण रहता था।
- बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’ एक हिन्दुस्तानी रईस थे। बसंत-पंचमी, होली आदि त्योहारों पर उनके यहाँ उत्सव हुआ करते थे। उनकी बातों में विलक्षण वक्रता थी। उनकी बातचीत का ढंग निराला था। वे बहुत विनोदप्रिय एवं हाजिर जवाब भी थे।

अभ्यास कार्य

1 :- लेखक ने अपने पिता जी की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

2 :- उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’ की पहली झलक लेखक ने किस प्रकार देखी?

3 :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?

4 :- लेखक की मित्र मंडली का नाम निस्संदेह किसने तथा क्यों रखा?

5 :- लेखक के समव्यस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली में कौन-2 से लेखक थे?

6 :- ‘प्रेमघन की छाया-स्मृति’ के आधार पर चौधरी साहब के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

7 :- ‘भारतेन्दु जी के मकान के नीचे का यह हृदय-परिचय बहुत शीघ्र गहरी मैत्री में परिणत हो गया।’ - आशय स्पष्ट कीजिए।

8 :- ‘इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्‌भुत मिश्रण रहता था।’ इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

सप्रसंग व्याख्या

(क) मेरे पिताजी .... बदरीनारायण चौधरी। (ख) भारतेन्दु मंडल ... रहती झाँकी थी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सुमिरिनी के मनके

–पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(क) बालक बच गया

पाठ परिचय

सुमिरिनी के मनके शीर्षक के अंतर्गत गुलेरी जी द्वारा रचित तीन लघु निबंध संकलित हैं – 'बालक बच गया,' 'घड़ी के पुर्जे' और 'ढेले चुन लो'। 'बालक बच गया' में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि बच्चों को उनकी आयु के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि उनका स्वाभाविक विकास हो सके।

'घड़ी के पुर्जे' में लेखक ने घड़ी के दृष्टांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि धर्म के रहस्यों की जानकारी रखना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। धर्मोपदेशकों द्वारा इस कार्य में बाधा डालने को लेखक ने बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'ढेले चुन लो' में लेखक ने समाज में प्रचलित अंध विश्वासों पर कड़ा प्रहार किया है तथा उन्हें छोड़ देने का आग्रह किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- लेखक एक पाठशाला के वार्षिकोत्सव पर आमंत्रित थे। प्रधान अध्यापक का आठ वर्षीय पुत्र भी वहाँ था। उसकी आँखे सफेद थी, मुँह पीला था तथा दृष्टि भूमि से उठती नहीं थी।
- बालक से प्रश्न पूछे जा रहे थे तथा वह उन प्रश्नों के रटे-रटाये उत्तर दे रहा था। सभा 'वाह-वाह' करके उसके उत्तर सुन रही थी। वह धर्म के दस लक्षण, नौ रसों के उदाहरण, चंद्रग्रहण का वैज्ञानिक समाधान, इंग्लैंड के राजा आठवें हेनरी की पत्नियों के नाम तथा पेशवाओं के शासनकाल के विषय में बता गया।
- पूछे जाने पर बालक ने बताया कि वह जन्म भर लोकसेवा करना चाहता है। उसके पिता अपने पुत्र के प्रदर्शन से बेहद प्रसन्न थे।
- एक वृद्ध महाशय ने बालक से इनाम माँगने के लिए कहा। बालक के मुख पर भावों में परिवर्तन हो रहे थे। उसकी आँखों से स्पष्ट था कि उसके हृदय में बनावटी और स्वाभाविक भावों के बीच संघर्ष चल रहा है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- बालक को निर्णय लेने में कठिनाई हो रही थी। लेखक चिंतित था कि पता नहीं बालक अब कौन-सा रटा रटाया उत्तर दे। बालक ने धीरे से लड्डू माँगा। बालक के उत्तर से उसके पिता और अध्यापक निराश हो गए। लेखक ने चैन की साँस ली।

जब तक बालक ने पुरस्कार नहीं माँगा था, तब तक लेखक की साँस घुट रही थी। पिता और अध्यापक ने बालक की भावनाओं को कुचलने में कोई कसर नही छोड़ी थी। किन्तु बालक द्वारा लड्डू माँगे जाने से लेखक को लगा कि बालक बच गया, उसका बचपन बच गया क्योंकि लड्डू की माँगं उसके बालमन की स्वाभाविक माँग है। उसका बालमन, उसकी बाल-भावनाएँ अभी भी जीवित हैं। लेखक को बालक की माँग जीवित वृक्ष के हरे पत्तों की मधुर आवाज लगी जिसमें जीवन संगीत है, सूखी लकड़ी से बनी अलमारी की खड़खड़ाहट नहीं जो सिरदर्द देती है।

अभ्यास कार्य

1 :- बालक से कौन - 2 से प्रश्न पूछे गए?

2 :- ''मै यावज्जन्म लोकसेवा करूँगा।'' किसने कहा तथा क्यों कहा?

3 :- बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?

4 :- ''बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नहीं।'' कथन के आधार पर बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए?

(ख) घड़ी के पुर्जे

धर्मोपदेशक उपदेश देते समय कहते हैं कि धर्म की बातों को गहराई से जानने की इच्छा हर व्यक्ति को नहीं करनी चाहिए। जो कुछ उपदेशक बताते हैं उसे चुपचाप स्वीकार कर लेना चाहिए। इस मत के समर्थन में वे घड़ी का दृष्टांत देते हैं। उनका कहना है कि यदि आपको समय जानना हो तो जिसे घड़ी देखनी आती हो, उससे समय जानकर अपना काम चला लेना चाहिए। यदि आप इतने से संतुष्ट नहीं होते तो स्वयं घड़ी देखना सीख सकते हैं। किंतु मन में यह इच्छा नहीं करनी चाहिए कि घड़ी को खोलकर, इसके पुर्जे गिनकर, उन पुर्जो को यथा स्थान लगाकर घड़ी को बंद कर दे। यह काम साधारण व्यक्ति का नहीं, विशेषज्ञ का है। इसी प्रकार धर्म के रहस्यों का जानना भी केवल धर्माचार्यो का काम है।

लेखक कहता है कि घड़ी खोलकर ठीक करना कोई कठिन काम नहीं है। साधारण लोगों में से ही बहुत से लोग घड़ी को खोलकर ठीक करना सीखते भी है और दूसरों को सिखातें भी है। इसी प्रकार धर्माचार्यो को चाहिए कि वह आम आदमी को भी धर्म के रहस्यों की जानकारी दे। धर्म का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति को कोई धर्म के विषय में मूर्ख नहीं बना सकेगा। तुम अनाड़ी के हाथ में घड़ी मत दो, परन्तु जो घड़ीसाजी की परीक्षा उत्तीर्ण करके आया है उसे तो घडी देख लेने दो। लेखक धर्माचार्यो से यह भी कहता है कि यदि वे लोगों को धर्म के बारे में शिक्षित करते है तो इससे यह भी पता चलता है कि स्वयं धर्माचार्यों को धर्म की कितनी जानकारी है। लेखक, स्वयं को धर्म का ठेकेदार समझने वाले धर्माचार्यों पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि ये लोग दूसरों को धर्म के रहस्य जानने से रोकते है क्योंकि स्वयं उन्हें ही धर्म की पूरी जानकारी नहीं है। ये धर्माचार्य उस व्यक्ति

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

की तरह है जो परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरता है, वह बंद हो गई है, न तो उसे चाबी देना आता है, न पुर्जे सुधारना तब भी दूसरों को घड़ी को हाथ नहीं लगाने देता, क्योंकि इससे उसकी अपनी सच्चाई सामने आ जाने का डर है।

अभ्यास कार्य

1 :- ''धर्म का रहस्य जानना वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है।'' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत है?

2 :- धर्म का रहस्य जानने के लिए लेखक ने 'घड़ी के पुर्जे' का दृष्टांत क्यों दिया है?

3 :- ''अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो।'' - आशय स्पष्ट कीजिए।

4 :- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि - ''हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, वह बंद हो गई है तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्जे सुधारना, तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते।''

5 :- 'जहाँ धर्म पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है वहीं धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का द्योतक है।' तर्क सहित व्याख्या कीजिए।

(ग) ढेले चुन लो

- शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' में पोर्शिया अपने वर को बड़ी सुंदर विधि से चुनती है। बबुआ हरिश्चन्द्र के नाटक 'दुर्लभ बंधु' में पुरश्री, पेटियों के द्वारा वर का चुनाव करती है।

- इसी प्रकार वैदिककाल में जीवन-साथी का चुनाव करने के लिए हिन्दुओं में मिट्टी के ढेलों की लाटरी चलती थी। इस लाटरी में विवाह का इच्छुक युवक कन्या के पिता के घर जाता था और उसे गाय भेंट करने के बाद कन्या के सामने कुछ मिट्टी के ढेले रखकर, उनमें से एक ढेला चुनने को कहता था। इन ढेलों को कहाँ से लिया गया था, यह केवल युवक जानता था, कन्या नहीं। यदि कन्या युवक की इच्छानुसार ढेले चुन लेती तो युवक उसे अपना जीवनसाथी बना लेता था।

- ढेलों के चुनाव के विषय में यह माना जाता था कि यदि कन्या वेदी का ढेला उठा ले तो संतान 'वैदिक पंडित', यदि गोबर चुना तो' 'पशुओं का धनी', खेती की मिट्टी छू ली तो 'जमीदारं पुत्र' होगी। मसान की मट्टी को हाथ लगाना बड़ा अशुभ माना जाता था। परन्तु ऐसा नहीं था कि मसान की मिट्टी छूने वाली कन्या का कभी विवाह नहीं होगा। यदि वही कन्या किसी अन्य युवक के सामने कोई अन्य ढेला उठा ले, तो उसका विवाह हो जाता था।

- ढेलों के आधार पर जीवनसाथी का चयन आज के लोगों को कोरा अंधविश्वास प्रतीत हो सकता

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

है, परन्तु लेखक का मत है कि आज भी लोग ज्योतिष गणना, कुंडली तथा गुणों के मिलान के आधार पर विवाह तय करते है। लेखक के अनुसार यदि मिट्टी के ढेलों द्वारा जीवनसाथी का चयन अनुचित है तो ग्रहों-नक्षत्रों की चाल के आधार पर जीवनसाथी चुनना तो और भी अनुचित है।

- लेखक का मानना है कि जो हमारे पास आज है उसी पर निर्भर होना अच्छा है बजाए उस चीज के जिसकी हमें भविष्य में मिलने की उम्मीद है। भविष्य अनिश्चित है। पता नहीं वह वस्तु हमें मिले या ना मिले। इसलिए भविष्य की अपेक्षा वर्तमान पर विश्वास करना उचित होगा। ठीक इसी प्रकार लेखक जीवन साथी के चुनाव के लिए मिट्टी के ढेलों को ग्रह नक्षत्रों की काल्पनिक चाल की गणना से अधिक विश्वसनीय मानता है क्योंकि ये ढेले वर द्वारा स्वयं चुने तथा एकत्र किए गए है।

अभ्यास कार्य

1 :- वैदिककाल में हिंदुओं में जीवनसाथी के चुनाव के संबंध में क्या प्रथा प्रचलित थी?

2 :- ''अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथों से चुने हुए मिट्टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मिट्टी और आग के ढेलों, मंगल, शनिचर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है?'' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

3 :- जीवनसाथी का चुनाव मिट्टी के ढेलों पर छोड़ने से कौन-कौन से फल प्राप्त होती है?

4 :- ''आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से। आँखो देखा ढेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेजपिंड से।'' - इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कच्चा चिट्ठा

– ब्रजमोहन व्यास

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत पाठ लेखक ब्रजमोहन व्यास की आत्मकथा 'मेरा कच्चा चिट्ठा' का एक अंश है। व्यास जी की सबसे बड़ी देन इलाहाबाद का विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय है। इस पाठ में उन्होने इस संग्रहालय के लिए बिना किसी विशेष व्यय के, अपने श्रम एवं बौद्धिक कौशल का प्रयोग करते हुए सामग्री एकत्र करने का विवरण प्रस्तुत किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- सन् 1936 के लगभग लेखक कौशाम्बी गया था। वहाँ से काम समाप्त कर वह पसोवा चला गया। पसोवा एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। प्राचीन काल से वहाँ हर वर्ष जैनों का मेला लगता है। कहते है इसी स्थान पर एक छोटी सी पहाड़ी की गुफा में बुद्धदेव व्यायाम करते थे। यह भी कहा जाता है कि इसी के पास सम्राट अशोक ने एक स्तूप बनवाया था जिसमें बुद्ध के थोड़े से केश और नखखंड रखे गए थे। अब यहाँ स्तूप और व्यायामशाला के चिह्न नहीं है, परन्तु पहाड़ी अवश्य है।

- लेखक संग्रहालय के लिए पुरातत्व महत्व की सामग्री की खोज में लगा रहता था। लेखक कहता है कि वह कहीं भी जाता है तो छूँछे (खाली) हाथ नहीं लौटता है। पसोवा में उसे काफी अच्छी मिट्टी की मूर्तियाँ, सिक्के और मनके प्राप्त हुए। लेखक इस सामग्री को लेकर कौशाम्बी लौट रहा था तो रास्ते में लगभग 20 सेर वजन की शिव की एक चतुर्मुखी मूर्ति पेड़ के नीचे रखी दिखाई दी। लेखक का मन उसे उठाने के लिए ललचाने लगा। लेखक अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए बताता है जैसे किसी बिल्ली ने चांद्रायण का उपवास रखा हो और उसके सामने स्वयं एक चूहा आ जाए तो ऐसी स्थिति में बिल्ली को चूहा खाने के कर्त्तव्य का पालन करना ही पड़ेगा। बिल्ली का कर्त्तव्य है, चूहे को अपना भोजन बनाना। चूहे को सामने देखकर तो वह अपना व्रत तोड़ने को विवश होगी ही, इसमें बिल्ली का क्या दोष है? इसी प्रकार लेखक ने भी अपना कर्त्तव्यपालन करते हुए मूर्ति को उठाकर इक्के पर रख लिया और लाकर नगरपालिका के संग्रहालय में रखवा दिया।

- कुछ समय बाद गाँववालों को पता चला कि चतुर्मुख शिव की मूर्ति अपने स्थान से गायब है। उनका शक सीधा लेखक पर गया क्योंकि लेखक मूर्तियाँ उठाने के लिए पूरे क्षेत्र में प्रख्यात था। लेखक एक कहावत का हवाला देते हुए कहता है कि जब अपना सोना ही खोटा हो तो परखने वाले का क्या दोष? कौशाम्बी मंडल से कोई भी मूर्ति गायब होने पर लोगों का शक सीधा लेखक पर जाता था और 95 प्रतिशत मामलों में उनका संदेह सही भी निकलता था।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- सारे गाँववाले एकत्र होकर लेखक के पास पहुँच गए। उन्होनें मूर्ति लौटाने की प्रार्थना की। उनकी ममता और श्रद्धा देखकर लेखक ने भगवान शंकर की मूर्ति उन्हें लौटा दी।
- एक बार लेखक को कौशाम्बी में एक खेत की मेड़ पर बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी मूर्ति जिसका सिर नही था दिखाई पड़ी।
- वह मूर्ति मथुरा के लाल पत्थर की बनी हुई थी। लेखक जब पाँच-छह लोगों के साथ मूर्ति उठाने लगा तो एक बुढ़िया ने उन्हें रोक दिया। लेखक बुढ़िया को दो रूपये देकर मूर्ति को संग्रहालय में ले आया।
- एक बार एक फ्रांसीसी व्यक्ति संग्रहालय देखने आया। बातों ही बातों में पता चला कि वह पुरातत्व वस्तुओं का व्यापारी है। इसी संदर्भ में लेखक कहता है कि कौवा और कोयल दोनों का रंग-रूप एक जैसा होता है। परन्तु बोली से दोनों का अंतर स्पष्ट होता हैं। इसी प्रकार जब फ्रांसीसी व्यक्ति संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुओं का मूल्य आँकने लगा तो पता लगा कि वह एक दर्शक नहीं व्यापारी है। फ्रांसीसी डीलर ने लेखक से कहा उसका संग्रह बहुत कीमती है, यदि उसकी कीमत रूपयों में बता दी जाए तो लेखक का ईमान डगमगा सकता है। लेखक ने उत्तर दिया कि ईमान जैसी कोई वस्तु उसके पास है ही नहीं तो उसके डिगने का सवाल ही नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा-कौड़ी के हो ही नहीं सकता। इस प्रकार लेखक अपने हल्के-फुल्के अंदाज में उस डीलर को यह संकेत दे दिया कि - पहला, उसका संग्रह बिकाऊ नही है। दूसरा, इस संग्रह के लिए उसे कई बार बेईमानी का सहारा भी लेना पड़ा, लेकिन इसमें उसका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं था।
- फ्रांसीसी डीलर ने बोधिसत्व की मूर्ति का मूल्य दस हजार लगाया। लेखक ने मूर्ति देने से इंकार कर दिया। यह मूर्ति बोधिसत्व की अब तक की सबसे प्राचीन मूर्तियों में से थी। इस मूर्ति के पदस्थल पर यह उत्कीर्ण था कि कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यकाल के दूसरे वर्ष स्थापित की गई थी। इसके बाद लेखक उत्साहपूर्वक मूर्तियों की तलाश में और अधिक तेजी से जुट गया।
- सन् 1938 के लगभग श्री मजूमदार की देखरेख में पुरातत्व विभाग कौशाम्बी में खुदाई कर रहा था। गाँव हजियापुर में खुदाई के दौरान भद्रमथ का एक भारी शिलालेख मिला। श्री मजूमदार उसे उठवा ले जाना चाहते थे। गाँव के जमींदार गुलजार मियाँ उस शिलालेख को संग्रहालय के लिए व्यास जी को देना चाहते थे। परंतु अन्ततः दिल्ली से दीक्षित साहब के हस्तक्षेप के बाद गुलज़ार मियाँ को वह शिलालेख मजूमदार जी को ही सौंपना पड़ा।
- लेखक ने सोचा जिस गाँव में भद्रमथ शिलालेख हो सकता है वहाँ और भी शिलालेख होंगें, इसलिए वह हजियापुर गाँव पहुँचा। वहाँ गुलजार मियाँ के घर के सामने एक कुँआ था। उस पर अठपहल पत्थर की बँडेर थी जिस पर एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक ब्राह्मी अक्षरों में लेख था। गुलजार मियाँ ने तुरन्त लेखक को वह बँडेर सौंप दी। इस प्रकार भद्रमथ के शिलालेख की क्षतिपूर्ति हो गई।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- अपने आधिकारिक दौरों के दौरान भी लेखक संग्रहालय के लिए ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं के संग्रह में लगा रहता था। सामग्री की अधिकता के कारण संग्रहालय के लिए नए भवन का निर्माण किया गया।
- लेखक कच्चे चिट्ठे के समापन से पहले अपने सहयोगियों का आभार प्रकट करता है, जिनके नाम इस प्रकार है – राय बहादुर कामता प्रसाद कक्कड़ (तत्कालीन चेयरमैन) हिज हाइनेस श्री महेन्द्र सिंहजू देव नागौद नरेश, उनके दीवान लाल भार्गवेन्द्र सिंह तथा लेखक का अर्दली जगदेव।

  लेखक स्वयं को निमित मात्र मानता है तथा संग्रहालय का कार्यभार सुयोग्य संरक्षक डॉ॰ सतीशचन्द्र काला के हाथों सौपकर सन्यास ले लेता है।

अभ्यास प्रश्न

1 :– लेखक पसोवा क्यों जाना चाहता था? पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था?

2 :– 'मैं कहीं जाता हूँ तो 'छूँछे' हाथ नही लौटता।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

3 :- ''चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्त्तव्य पालन करना ही पड़ता है।'' यह वाक्य किस संदर्भ में कहा गया हैं और क्यों?

4 :– ''अपना सोना खोटा तो परखवैया का कौन दोस?'' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

5 :- लेखक द्वारा प्रयाग संग्रहालय हेतु बोधिसत्व की मूर्ति प्राप्त करने की घटना का वर्णन कीजिए?

6 :– ''ईमान! ऐसी कोई चीज मेरे पास हई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा–कौड़ी के हो ही नही सकता।'' – यह किसने कहा और क्यों कहा?

प्रश्न 8 :– फ्रांसीसी डीलर बोधिसत्व की मूर्ति के लिए दस हजार रूपये देने को क्यों तैयार था?

प्रश्न 9 :– भद्रमथ शिलालेख की क्षतिपूर्ति किस प्रकार हुई? स्पष्ट कीजिए।

सप्रसंग व्याख्या

(क) मै कहीं जाता हूँ .... मूर्तियों के साथ रख दिया।

(ख) उसके थोड़े ही दिन बाद .... काम कर रहा था।

(ग) कौवा भी काला .... हो ही नहीं सकता।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

संवदिया

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

कहानी परिचय :-

प्रस्तुत कहानी 'संवदिया' फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा रचित है। इस कहानी में मानवीय संवेदना की गहन अभिव्यक्ति हुई है। 'रेणु' ने विपन्न, बेसहारा, सहनशील बड़ी बहुरिया की असहाय स्थिति, उसकी कोमल भावनाओं, मानसिक यातना तथा पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है।

स्मरणीय बिन्दु –

- हरगोबिन एक संवदिया है। संवदिया अर्थात् संदेशवाहक। बड़ी हवेली से बड़ी बहुरिया का बुलावा आने पर हरगोबिन को आश्चर्य हुआ कि आज जबकि संदेश भेजने के लिए गाँव–गाँव में डाकघर खुल गए हैं, बड़ी बहुरिया ने उसे क्यों बुलवाया है? फिर हरगोबिन ने अंदाजा लगाया कि अवश्य ही कोई गुप्त संदेश ले जाना है।

- बड़ी हवेली पहुँचने पर हरगोबिन अतीत की यादों में खो गया पहले बड़ी हवेली में नौकर नौकरानियों की भीड़ लगी रहती थी। आज बड़ी बहुरिया सूपा में अनाज फटक रही है। समय कितना बदल गया है।

- बड़े भैया की मृत्यु के बाद तीनों भाई परस्पर लड़ने लगे। बड़ी बहू के जेवर–कपड़े तक भाइयों ने आपस में बाँट लिये। लोगों ने जमीन पर कब्जा कर लिया। तीनों भाई गाँव छोड़कर शहर में जा बसे। गाँव में केवल बड़ी बहुरिया रह गई।

- अब बड़ी बहुरिया की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि वह उधार लेकर अपना खर्च चला रही थी। गाँव की मोदिआइन अपना उधार वसूल करने के लिए बैठी थी और बड़ी बहुरिया को कड़वी बातें सुनाती जा रही थी। बड़ी बहुरिया उसका उधार चुकाने की स्थिति में नही थी।

- मोदिआइन के जाने के बाद बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को बताया कि वह अपनी माँ के पास संवाद भेजना चाहती है। संवाद कहने से पूर्व ही बड़ी बहुरिया रोने लगी। हरगोबिन ने पहली बार बड़ी बहुरिया को इस प्रकार रोते देखा था। उसकी भी आँखे छलछला आई। बड़ी बहुरिया ने फिर दिल को कड़ा करके कहा– 'माँ से कहना, मैं भाई–भाभियों की नौकरी करके पेट

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पालूँगी, बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी। लेकिन अब यहाँ नही रह सकूँगी।' यदि माँ मुझे यहाँ से नही ले जाएगी तो मै आत्महत्या कर लूँगी। बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए जीऊँ? किसके लिए जीऊँ?

- हरगोबिन बड़ी बहुरिया के प्रति उसके देवर-देवरानियों के व्यवहार को जानता था। उसका रोम-रोम कलपने लगा। बड़ी बहुरिया की दुर्दशा देखकर उसका मन बहुत दुःखी हुआ। बड़ी बहुरिया हरगोबिन के जाने के राहखर्च के लिए मात्र पाँच रूपये जुटा पाई थी। हरगोबिन ने यह कहकर राहखर्च लेने से इंकार कर दिया कि राहखर्च का इंतजाम वह स्वयं कर लेगा।

- संवदिया अर्थात् संदेशवाहक का कार्य प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता। यह प्रतिभा जन्मजात होती है। संवदिया को संवाद का प्रत्येक शब्द याद रखना होता है। उसी सुर और स्वर में तथा ठीक उसी ढंग से संवाद सुनाना आसान काम नही है। परन्तु संवादिया के विषय में गाँववालो की धारणा सही नहीं थी। उनके अनुसार निठल्ला, पेटू और कामचोर व्यक्ति ही संवदिया का काम करता है। ऐसा व्यक्ति जिसके ऊपर कोई पारिवारिक जिम्मेवारी न हो। गाँववालों के अनुसार संवादिया औरतों की मीठी-मीठी बातों में आ जाता है तथा बिना मजदूरी लिए कही भी संवाद पहुँचाने को तैयार हो जाता है।

- पति की मृत्यु के बाद बड़ी बहुरिया हो गई थी। वह अभाव-ग्रस्त एवं कष्टमय जीवन व्यतीत कर रही थी। हरगोबिन के मन में काँटे की चुभन का अनुभव हो रहा था क्योंकि उसे बड़ी बहुरिया के संवाद का प्रत्येक शब्द उसे याद आ रहा था। उसके संवाद में उसके हृदय की वेदना, उसकी बेबसी, उसका दुःख झलक रहा था। हरगोबिन उसकी पीड़ा को अपने भीतर महसूस कर रहा था। मन की इस चुभन से छुटकारा पाने के लिए उसने अपने सहयात्री से बातचीत करने का उपाय सोचा।

- लोग संवदिया की बहुत खातिरदारी करते थे, उसे बहुत सम्मान देते थे क्योंकि वह लम्बी यात्रा करके उनके प्रियजनों का संदेश उन तक लाता था। उसे अच्छी तरह भोजन कराया जाता था। भरपेट भोजन करने के बाद संवदिया यात्रा की थकान उतारने के लिए गहरी नींद सोता था। परन्तु बड़ी बहुरिया के मायके पहुँचने पर जब हरगोबिन के सामने कई प्रकार के व्यंजनों से भरी थाली आई, तो उससे खाना खाया नहीं गया। उसे रह-रहकर बड़ी बहुरिया का ध्यान आ रहा था कि वह बथुआ साग उबालकर खा रही होगी। बूढ़ी माँ ने बहुत आग्रह किया पर हरगोबिन से ज्यादा खाया ही नहीं गया। हरगोबिन बड़ी बहुरिया का सही संदेश बूढ़ी माँ को नहीं सुना पाया था, इसी चिंता में रातभर उसे नींद नही आ रही थी। उसके मन में विचारों का संघर्ष चल रहा था।

- हरगोबिन के मन में बड़ी बहुरिया और अपने गाँव के प्रति बहुत सम्मान था। वह बड़ी बहुरिया को गाँव की लक्ष्मी मानता था। वह सोच रहा था कि यदि गाँव की लक्ष्मी ही गाँव छोड़कर मायके चली जाएगी तो गाँव में क्या रह जाएगा? वह किस मुँह से यह संदेश दे कि बड़ी बहुरिया उसके गाँव में बथुआ साग खाकर गुजारा कर रही है, वह कष्ट में है इसलिए उसे अपने पास

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बुला लो। यह संवाद सुनकर लोग उसके गाँव के नाम पर थूकेंगे। अपने गाँव की बदनामी के भय से हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संदेश नहीं सुना सका।

❑ जलालगढ़ पहुँचकर हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया के पैर पकड़कर, संवाद न सुना पाने के कारण माफी माँगी। उसने कहा कि वह बड़ी बहुरिया के बेटे के समान है। बड़ी बहुरिया उसकी माँ के समान है, पूरे गाँव की माँ के समान है। वह उससे आग्रह करता है कि वह गाँव छोड़कर न जाए तथा साथ ही संकल्प लेता है कि वह अब निठल्ला नहीं बैठा रहेगा। उसे कोई कष्ट नहीं होने देगा तथा उसके सब काम करेगा। बड़ी बहुरिया स्वयं अपने मायके संदेश भेजने के बाद से ही पछता रही थी।

अभ्यास कार्य

1 :- एक अच्छे संवदिया की क्या विशेषताएँ है? गाँववालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

2 :- बड़ी बहुरिया अपने मायके क्या संदेश भेजना चाहती थी?

3 :- बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन ने क्या सोचा?

4 :- बड़ी हवेली पहुँचकर हरगोबिन किन यादों में खो गया?

5 :- गाड़ी पर सवार होने के बाद संवादिया के मन में काँटे की चुभन का अनुभव क्यों हो रहा था? उससे छुटकारा पाने का उसने क्या उपाय सोचा?

6 :- बड़ी बहुरिया के द्वारा अपनी माँ को भेजा गया संदेश, हरगोबिन क्यों नही सुना सका?

7 :- ''संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है।'' -से क्या तात्पर्य है?

8 :- जलालगढ़ पहुँचने के बाद हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया से माफी क्यों माँगी तथा उसके सामने क्या संकल्प लिया?

सप्रसंग व्याख्या :-

(क) आदमी भगवान .... ले जा रहा है वह।

(ख) संवदिया डटकर .... एक कोने में पड़ी रहेगी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात

– भीष्म साहनी

पाठ परिचय

भीष्म साहनी द्वारा रचित संस्मरण 'गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफ़ात' उनकी आत्मकथा 'आज के अतीत' का एक अंश है। सेवाग्राम में गांधी जी, काश्मीर में जवाहरलाल नेहरू तथा फिलिस्तीन में यास्सेर अराफ़ात के साथ बिताए समय का सरस एवं प्रभावी वर्णन किया है तथा देशभक्ति तथा अंतर्राष्ट्रीय मैत्री जैसे मुद्दे भी पाठक के समक्ष रखे है।

(क) गांधी जी

स्मरणीय बिंदु

- लेखक सन् 1938 में सेवाग्राम गया था। लेखक के भाई बलराज साहनी सेवाग्राम में रहते थे। लेखक उनके पास रहने कुछ दिन के लिए गया था। भाई बलराज ने उसे बताया कि गांधी जी प्रात: भ्रमण के लिए प्रतिदिन उसके क्वार्टर के सामने से जाते है। लेखक गांधी जी के साक्षात् दर्शन हेतु बेहद उत्साहित था।
- अगले दिन सुबह की सैर के दौरान वह गांधी जी से मिला। गांधी जी को पहली बार देखकर वह रोमांचित हो उठा। गांधी जी के साथ चलने का उसका पहला अनुभव बहुत अच्छा रहा। इस महान व्यक्ति को देखकर लेखक प्रसन्न हो उठा। उसने गांधी जी को चित्रों में जिस रूप में देखा था, वास्तविक रूप में भी वे बिल्कुल वैसे ही थे। उन्होनें बड़े प्रेम से लेखक से बात की। वे बहुत धीमी आवाज में बोलते थे तथा हमेशा हँसकर बात करते थे।
- लेखक लगभग तीन सप्ताह तक सेवाग्राम रहा। यहाँ उसे अनेक जाने माने व्यक्तित्व देखने को मिले। इनमें से प्रमुख थे – पृथ्वी सिंह आजाद, मीरा बेन, खान अब्दुल गफ्फार खान तथा राजेन्द्र बाबू।
- आश्रम के बाहर सड़क के किनारे एक खोखे में एक पंद्रह वर्षीय बालक जोर-जोर से हाथ-पैर पटक रहा था तथा चिल्ला-चिल्लाकर बापू को पुकार रहा था। बापू आए और बालक का फूला हुआ पेट देखकर उसकी परेशानी समझ गए। उन्होनें उसे उल्टी कराई और जब तक वह उल्टी करता रहा, वह उसकी पीठ पर प्यार से हाथ रखे झुके रहे। इसके बाद उन्होनें उसे खोखे में लेटने को कहा।

(ख) नेहरू जी

स्मरणीय बिंदु

- नेहरू जी कश्मीर यात्रा पर आए थे। यहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में झेलम नदी में, शहर के एक सिरे में दूसरे सिरे तक, नावों में उनकी शोभायात्रा निकाली गई।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- लेखक पंडित जी की देखभाल में अपने फुफेरे भाई का सहायक था। नेहरू जी का कमरा ऊपर वाली मंजिल पर था। लेखक नीचे आकर समाचार पत्र देखने लगा। उसने निर्णय किया कि जब तक नेहरू जी स्वयं समाचार पत्र नहीं माँगेगे वह समाचार पत्र पढ़ता ही रहेगा। नेहरू जी कुछ देर चुपचाप खड़े रहे फिर धीरे से बोले – ''आपने देख लिया हो तो क्या मै भी एक नजर देख सकता हूँ।'' यह सुनकर लेखक शर्मिन्दा हो गया और उसने तुरन्त वह अखबार नेहरू जी के हाथ में दे दिया।

(ग) यास्सेर अराफ़ात

- उन दिनों लेखक अफ्रो-एशियाई लेखक संघ में कार्यकारी महामंत्री के पद पर कार्यरत था। टयूनीसिया की राजधानी ट्यूनिस में लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लेने गया हुआ था। टयूनिस में उन दिनों यास्सेर अराफ़ात के नेतृत्व में फिलिस्तीन अस्थायी सरकार काम कर रही थी। लेखक संघ की गतिविधियों में भी फिलिस्तीनी लेखकों, बुद्धिजीवियों तथा अस्थायी सरकार का बड़ा योगदान था।
- ट्यूनिस में लोट्स पत्रिका का संपादकीय कार्यालय था। एक दिन लोटस के तत्कालीन संपादक लेखक के पास आए और उसे सपत्नी सदरमुकाम में आमंत्रित किया।
- जब लेखक अपनी पत्नी के साथ वहाँ पहुँचा तो यास्सेर अराफ़ात अपने एक-दो साथियों के साथ बाहर आए और उन्हें आदर सहित अंदर ले गए। बातचीत के दौरान यास्सेर अराफ़ात से फिलिस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी शक्तियों के अन्यायपूर्ण रवैये, भारतीय नेताओं द्वारा की गई उसकी निंदा, फिलिस्तीनी आंदोलन के प्रति भारत की सहानुभूति एवं समर्थन आदि विषयों पर चर्चा हुई।
- बातचीत के दौरान गांधी जी का जिक्र आने पर अराफ़ात बोले – 'वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता है। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए है।' अराफ़ात भारतीय नेताओं के निकट सम्पर्क में रहे थे। गांधी जी की प्रसिद्धि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर थी। उनके सत्य, अंहिसा तथा सत्याग्रह आन्दोलनों तथा उनकी सफलता के कारण उन्हें पूरे विश्व में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। यास्सेर अराफ़ात भी अहिंसक आन्दोलन के द्वारा फिलिस्तीनियों को उनकी मातृभूमि दिलाना चाहते थे। भारतीयों नेताओं का समर्थन एवं सहानुभूति उन्हें प्राप्त थी। इसलिए भारतीय नेताओं विशेषकर गांधी जी के प्रति उनके मन में आदर होना स्वाभाविक था।
- यास्सेर अराफ़ात ने लेखक का बड़ा अतिथि सत्कार किया। वे लेखक को स्वयं फल छील-छीलकर खिला रहे थे। वे उनके लिए शहद की चाय भी बना रहे थे तथा साथ ही शहद की उपयोगिता के विषय में भी बता रहे थे।
- भोजन के समय लेखक जब हाथ धोने गया तो उसे उस समय बड़ी झेंप महसूस हुई जब उन्होंने देखा कि अराफ़ात गुसलखाने के बाहर तौलिया लिए हुए खड़े थे। अराफात का आतिथ्य प्रेम भावुक हृदय को छू लेने वाला था।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास कार्य

1 :- लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था?

2 :- गांधी जी के साथ प्रात: भ्रमण का लेखक का अनुभव कैसा रहा?

3 :- लेखक ने सेवाग्राम में किन-किन लोगों के आने का जिक्र किया है?

4 :- रोगी बालक के प्रति गांधी जी का व्यवहार किस प्रकार था?

5 :- काश्मीर में नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया गया?

6 :- अखबार वाली घटना से नेहरू जी के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता प्रकट होती है?

7 :- अराफ़ात के आतिथ्य प्रेम की किन्हीं दो घटनाओं का वर्णन कीजिए?

8 :- ''वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता है। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए।'' इस कथन से अराफ़ात का क्या तात्पर्य है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

लघुकथाएँ

– असगर वजाहत

(क) शेर

कथा-परिचय

'शेर' असगर वजाहत की प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघुकथा है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है। जंगल के जानवर सामान्य जनता के प्रतीक है। शेर के पेट में जंगल के सभी जानवर किसी न किसी लालच में समाते जा रहे है। व्यवस्था भी किसी न किसी प्रकार सभी को अपने जाल में फँसा लेती है।

स्मरणीय बिन्दु

- ❑ आदमी सत्ता के जाल से बचने के लिए जंगल में जाता है किंतु वहाँ भी सत्ता का प्रतीक शेर विद्‌यमान है। सभी जानवर किसी न किसी प्रलोभन के कारण शेर के मुख में समाते जा रहे है।
- ❑ गधे को यह प्रलोभन दिया गया है कि शेर के मुँह में घास का मैदान है, लोमड़ी को यह बताया गया है कि वहाँ रोजगार का दफ़्तर है तथा कुत्तों से यह कहा गया है कि शेर के मुँह में प्रवेश करना ही निर्वाण का एकमात्र मार्ग है।
- ❑ लेखक सच्चाई का पता लगाने के लिए शेर के कार्यालय जाता है। जिस प्रकार सत्ता के पक्षधर सत्ता का गुणगान करते है उसी प्रकार कार्यालय के कर्मचारी शेर की तरफ़दारी करते हैं। लेखक उनसे शेर के मुँह में रोजगार के दफ़्तर होने की असलियत पूछने तथा उसका सबूत माँगने पर वे कहते है कि – 'मानव जीवन में प्रमाण से अधिक विश्वास महत्वपूर्ण है।' लेखक कहता है कि जितने भी ठग और मक्कार लोग होते है वे अपनी बात का कोई प्रमाण नहीं दे सकते क्योंकि वे झूठे होते है। इसलिए वे लोगों से बिना सबूत दिए, केवल ऐसे ही विश्वास करने का आग्रह करते है। जब लोग इन पर विश्वास करने लगते है तो वे उनके विश्वास का अनुचित लाभ उठाते हैं। शेर के आफ़िस के कर्मचारी भी यही कर रहे हैं।
- ❑ शेर का मुँह तथा रोजगार के दफ़्तर के बीच यह अन्तर है कि शेर का मुँह तो मात्र एक छलावा है। रोजगार का दफ़्तर रोजगार प्राप्ति का एक माध्यम है। शेर के मुँह में जाने से लोगों को धोखा मिलता है जबकि रोजगार दफ़्तर के माध्यम से लोगों को रोजगार मिलता है।

(ख) पहचान

कथा परिचय

पहचान के माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि राजा को अंधी, बहरी और गूँगी प्रजा पसंद होती है जो बिना कुछ देखे, सुने और बोले राजा के आदेशों का पालन करती रहे।

स्मरणीय बिंदु

- ❑ राजा देश शान्ति, उत्पादन और तरक्की का हवाला देते हुए आँखे, कान और मुँह बंद करने के आदेश देता है। परन्तु वास्तव में उसका उद्देश्य था कि लोग राजा के निरंकुश एवं स्वार्थपूर्ण

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कार्यो को न देख सकें। वे किसी की बाते सुनकर सत्ता का विरोध न कर सके तथा राजा के विरूद्ध आवाज न उठाएँ।

- यदि जनता राज्य की स्थिति को अनदेखा करती है, उसकी ओर ध्यान नहीं देती तो शासक वर्ग निरंकुश हो जाता है। शासक की व्यक्तिगत उन्नति तो खूब होती है परन्तु राज्य की प्रगति रूक जाती है। यदि राज्य की जनता, राज्य की स्थिति के प्रति सचेत नही रहती है तो शासक वर्ग राज्य के संसाधनों का प्रयोग अपने व्यक्तिगत हित के लिए करता है तथा राज्य की स्थिति में सुधार और विकास में उसकी कोई रूचि नही होती है।
- खैराती, रामू और छिद्दू जागरूक एवं सचेत जनता के प्रतीक है। राजा के आदेश पर आँखे बंद करके वे भी सामान्य जनता के समान हो गए। कुछ समय बाद राज्य की प्रगति देखने की इच्छा से उन्होनें जब आँखे खोली तो उन्हें सर्वत्र सत्ता की शक्ति ही दिखाई दी। उन्हें सामने केवल राजा ही दिखाई दिया, प्रजा वहाँ नही थी। चारो और सत्ता का ही प्रभुत्व था, जनता का कोई अस्तित्व नहीं था। सत्ता इतनी शक्तिशाली हो चुकी थी कि बदलाव की कोई गुंजाइश नही थी।

(ग) चार हाथ

कथा-परिचय

- 'चार हाथ' पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों के शोषण से उजागर करती है। पूंजीपति अपने लाभ में वृद्धि के नए-नए तरीके अपनाते है। वह अपने लाभ के लिए मजदूरों का शोषण करता है और कई बार उनके स्वाभिमान को भी ठेस पहुँचाता है। मजदूर अपनी निर्धनता और मजबूरी के कारण विरोध की स्थिति में नहीं होते है। मजदूर विवशता के कारण आधी मज़दूरी में भी काम करने को राजी हो जाते है।

स्मरणीय बिन्दु

- एक मिल मालिक ने अपना मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए, मिल के मजदूरों को चार हाथ लगाने की योजना बनाई। इस काम में वैज्ञानिकों का शोध असफल होने पर उसने यह कार्य स्वयं करने का निश्चय किया।
- मिल मालिक ने कटे हुए हाथ मजदूरों के फिट करने चाहे पर वह असफल रहा। फिर उसने लकड़ी तथा उसके बाद लोहे के हाथ फिट करने चाहे, परन्तु इस प्रयास में बहुत से मजदूर मर गए।
- चार हाथ न लग पाने की स्थिति में मिल मालिक की समझ में यह बात आयी कि मजदूरों का वेतन आधा कर दो और दुगने मजदूर काम पर रख लो तो मुनाफा वैसे ही दुगुना हो जाएगा। यह कार्य भी मजदूरों के चार हाथ लगाने जैसा ही होगा।

(घ) साझा

कथा-परिचय

उद्योगों पर कब्जा जमाने के बाद पूँजीपतियों की नजर किसानों की जमीन और उत्पाद पर जमी है। गाँव का प्रभुत्वशाली वर्ग भी पूँजीपत्तियों का सहयोग करता है। वह किसान को साझा खेती करने का झाँसा देता है और उसकी सारी फसल हड़प लेता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

स्मरणीय बिन्दु

- 'हाथी' जो कि पूँजीपति वर्ग का प्रतीक है, उसने किसान के समक्ष साझे की खेती का प्रस्ताव रखा। किसान ने इंकार कर दिया क्योंकि साझे की खेती के विषय में उसके कटु अनुभव थे। साझे की खेती से उसका भरण-पोषण नहीं होता है, अकेले खेती करने में उसको डर लगता है इसलिए अब वह खेती करना नहीं चाहता है।
- हाथी अपनी बातों में फँसाकर उसे खेती के लिए राजी कर लिया तथा फसल के बँटवारे के समय किसान की सारी फसल हड़प ली।

अभ्यास कार्य

1 :- 'शेर' कहानी में 'शेर' तथा 'जंगल के जानवर' किस-2 के प्रतीक है?

2 :- लोमड़ी स्वेच्छा से शेर के मुँह में क्यों जा रही थी?

3 :- शेर के मुँह तथा रोजगार के दफ़्तर के बीच क्या अंतर है?

4 :- 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास।' - कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

5 :- राजा ने कौन-2 से हुक्म निकाले? ऐसे हुक्म निकालने के क्या कारण थे?

6 :- यदि जनता राज्य की स्थिति की ओर से आँखे बंद कर ले तो उसका राज्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

7 :- खैराती, रामू और छिद्दू ने जब आँखे खोली तो उन्हें सामने राजा ही क्यों दिखाई दिया?

8 :- मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए मिल मालिक ने क्या उपाय सोचा?

9 :- हाथी तथा किसान के बीच फसल का बँटवारा किस प्रकार हुआ?

10 :- किसान साझे की खेती क्यों नही करना चाहता था?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जहाँ कोई वापसी नहीं

– निर्मल वर्मा

पाठ परिचय

'जहां कोई वापसी नहीं 'यात्रा वृतांत निर्मल वर्मा द्वारा रचित 'धुंध में उठती धुन' संग्रह से लिया गया है। लेखक का मत है कि अंधाधुंध विकास तथा पर्यावरण संबंधी सुरक्षा के बीच संतुलन होना चाहिए अन्यथा विकास हमेशा विस्थापन तथा पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं को जन्म देता रहेगा। औद्योगिक विकास के इस दौर में प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट होता को जन्म देता रहेगा। औद्योगिक विकास के इस दौर में प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट होता रहेगा तथा मनुष्य अपनी संस्कृति तथा परिवेश से विस्थापित होकर जीने को मजबूर होगा।

स्मरणीय बिंदु

- लेखक सन् 1983 में दिल्ली की 'लोकायन' संस्था की ओर से सिंगरौली के नवा गाँव गए थे जहाँ लगभग अठारह छोटे-छोटे गाँव थे। यही एक गाँव या 'अमझर'। जहाँ आम झरते थे (अत्याधिक पैदावर) पर जब से अमरौली प्रोजेक्ट के अन्तर्गत यह घोषणा हुई कि कई गाँव उजाड़ दिए जाऐगें तब से न जाने क्यों आम के पेड़ सूखने लगे। लेखक को लगा कि उसे आज विस्थापन के विरोध में प्रकृति का (पेड़ो का) सामूहिक मूक सत्याग्रह देखने का अनुभव हुआ। लेखक को लगा सत्य ही है कि आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेगा? लेखक ने टिहरी गढ़वाल में पेड़ों की रक्षा के लिए मनुष्य का सत्याग्रह तो सुना था पर व्यक्ति के लिए पेड़ों के सत्याग्रह को पहली बार महसूस किया था।
- लेखक के लिए यह भी अनूठा अनुभव किया था कि स्वच्छ, पवित्र और प्राकृतिक खुले वातावरण में जिन्दगी बिताने वाले लोग किस प्रकार विस्थापन के पश्चात् अनाथ, अपने मूल आधार से कटे होने के अहसास के साथ दम घुटती, भयावह बस्ती में रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं।
- लेखक ने उन्हें आधुनिक भारत का नया शरणार्थी माना है जिन्हें औद्योगिक विकास के नाम पर हमेशा-हमेशा के लिए उनके मूल स्थान से हटा दिया गया। प्राकृतिक आपदा के कारण जिन लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ता है वे कुछ अरसे बाद आफ़त टलते ही दोबारा अपने जाने-पहचाने परिवेश में लौट भी आते हैं, किंतु इतिहास जब विकास और प्रगति के नाम पर लोगों को विस्थापित करता है, तो वे फिर अपने घर वापस नहीं लौट सकते। औद्योगीकरण की

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

आँधीं में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल हमेशा के लिए समाप्त हो जाते है। सिंगरौली की उर्वरा भूमि और समृद्ध जंगलों को देखकर लेखक को अहसास होता है कि विकास के नाम पर किस प्रकार एक भरे पूरे ग्रामीण अंचल को कितनी नासमझी और निर्दयता से उजाड़ा जा सकता है।

- कभी-कभी इलाके की संपदा ही उसका अभिशाप बन जाती है। अपनी अपार खनिज संपदा के अभिशाप के कारण 'बैकुंठ और कालापानी' के नाम से सुशोभित सिंगरौली गाँव औद्योगीकरण की भेंट चढ़ गया।
- लेखक को लगता था कि औद्योगीकरण का चक्का, जो स्वतंत्रता के बाद चलाया गया, उसे रोका जा सकता था, उसके विकल्प तलाशे जा सकते थे, पश्चिम जिस विकल्प को खो चुका था भारत में उसकी संभावनाएँ खुली थी पर पश्चिमी देशों का अंधा अनुकरण करने के कारण सारी संभावनाएँ हाथ से निकल गई।
- भारत की सांस्कृतिक विरासत यूरोप की तरह म्यूजियम्स और संग्रहालयों में जमा नहीं थी अपितु आदमी और प्राकृतिक के अटूट रिश्तों में जीवित थी जो उसे पूरे परिवेश के साथ जोड़ती थी।
- यूरोप और भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ बिल्कुल भिन्न है। यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है, भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है।
- लेखक के अनुसार स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी ट्रैजेडी यह है कि शासक वर्ग ने औद्योगीकरण की योजनाएँ बनाते समय पश्चिमी देशों को अपना आदर्श माना, प्रकृति मनुष्य और संस्कृति के बीच एक नाजुक संतुलन किस प्रकार बचाया जा सकता है इसे सर्वथा भूल गए। हम भारतीय मर्यादाओं को आधार बनाकर भी भारतीय औद्योगिक विकास का स्वरूप निर्धारित कर सकते थे तथा विस्थापन और पर्यावरण संबंधित समस्याओं से बच सकते थे।

अभ्यास कार्य

1 :- अमझर से आप क्या समझते है? अमझर गाँव में सूनापन क्यों है?

2 :- आधुनिक भारत के 'नए शरणार्थी' किन्हें कहा गया है?

3 :- प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है?

4 :- लेखक के अनुसार स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजेडी' क्या है?

5 :- औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे?

सप्रसंग व्याख्या

(1) इन्हीं गाँवों में एक .... सिंगरौली में हुआ।

(2) ये लोग आधुनिक .... नष्ट हो जाते हैं।

(3) शायद पैंतीस वर्ष .... मौजूद रहता था।

(4) यूरोप में पर्यावरण .... ऐसा नहीं जान पड़ता।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

यथास्मै रोचते विश्वम्

– रामविलास शर्मा

पाठ परिचय

लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से की है। उसने कवि को प्रजापति के समान सृष्टा सिद्ध किया है। लेखक ने प्रजापति का दर्जा देते हुए कवि को उसके कार्यो के प्रति सचेत किया है। साहित्य समाज का दर्पण मात्र नही है। कवि का कार्य समाज के यथार्थ जीवन को मात्र प्रतिबिंबित करना नही है। कवि अपनी रूचि के अनुसार अपनी रचनाओं में संसार की रचना करता है। प्रजापति द्वारा निर्मित सृष्टि से असंतुष्ट होकर कवि नए समाज का निर्माण करता है। यह कवि का जन्म सिद्ध अधिकार है।

स्मरणीय बिन्दु

- कवि की सृष्टि निराधार नही होती। वह अपने सारे रंग आकार और रेखाएँ चारों और बिखरे यथार्थ जीवन से ही ग्रहण करता है। अपनी साहित्य रचना के लिए सामग्री कवि अपने चारों और के परिवेश से ही ग्रहण करता है। उज्ज्वल चरित्र को उज्ज्वल और अधिक प्रभावशाली दिखाने के लिए लेखक यथार्थ जीवन से दुश्चरित्र भी चुनता है। रावण के होने से ही राम की महत्ता है। कवि सद्गुण सम्पन्न पात्रों साथ दुर्गणयुक्त पात्रों का भी वर्णन करता है।
- बाल्मीकि ने दुर्लभ गुणों से युक्त राम के चरित्र का वर्णन किया था। दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का एक ही उद्देश्य होता है- समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करना, जिससें लोग प्रेरणा ले सकें।
- प्रजापति रूपी कवि यथार्थवादी होता है। वह समाज में लोगों के सुख-दुख, आशा-निराशा दोनों पक्षों को सुनता है, उसे महसूस करता है तथा उसे अपने साहित्य में अंकित भी करता है। उसकी रचनाओं में वर्तमान समाज का ठोस आधार होता है परन्तु उसका ध्यान भविष्य के नव-निर्माण पर लगा होता है। साहित्य थके हुए व्यक्ति के लिए विश्रांति का माध्यम ही नहीं है बल्कि उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है।
- यदि ब्रह्मा द्वारा बनाए गए समाज में मानव सम्बन्ध कवि की रूचि एवं आदर्शो के अनुरूप

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

होते तो उसे अपनी रचनाओं में एक नया संसार रचने की आवश्यकता ही नहीं होती। कवि के असंतोष की जड़ ये मानव संबंध ही है। साहित्य की रचना का मूल ये मानव संबंध ही है। कवि के मन-मस्तिष्क में मानव संबंधो की भावना इतनी प्रबल होती है कि वह अपनी रचनाओं में ईश्वर को भी मानवीय रूप में चित्रित करता है।

- ऐसे समय में जब अधिकांश लोगों का जीवन समाज की रूढ़ियों के बंधन में जकड़ा हुआ हो, वे इन बंधनों से दुखी हो तथा मुक्ति के प्रयास कर रहे हो तब कवि का प्रजापति रूप मुखरित हो उठता है। कवि मानव रूपी पक्षी की अशांत आवाज़ को स्वर देता है। वह स्वतंत्रता के गीत गाकर जनता में शासक वर्ग के प्रति आक्रोश भरता है। वह स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित कर उस पक्षी के परों में नई शक्ति भर देता है। इसे भय से मुक्त होने तथा स्वतंत्रता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

- यह जीवन संघर्ष का मैदान है। इसमें व्यक्ति को निरन्तर संघर्षशील रहना पड़ता है। जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने पाञ्चजन्य नामक शंख बजाकर अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित किया था, उसी प्रकार साहित्यकार लोगों को कर्मक्षेत्र में संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। वह लोगों में उदासीनता नहीं, उत्साह का स्वर बुलंद करता है। वह इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं कि मनुष्य अत्याचार सहते हुए, कष्ट सहते हुए, भाग्य के भरोसे रहे। साहित्य तो ऐसी प्रेरणा देने वालो की निंदा करता है, उन्हें हतोत्साहित करता है।

- आज भी मानवीय-संबंधों की दृष्टि से भारत पराधीन है। भारतीय जनमानस स्वतंत्र होने के लिए व्याकुल है इसके लिए वह सतत् प्रयास कर रहा है। धिक्कार है उन साहित्यकारों को जो उन्हें रूढ़ियों से मुक्त नहीं करता। वे साहित्य में तो मानवमुक्ति के गीत गाते है किन्तु व्यवहार में भारतीय जनता को गुलामी का पाठ पढ़ाते है। ऐसे साहित्यकारों को धिक्कार है जो भारतभूमि से उत्पन्न होकर भी उसका अहित कर रहे है।

- भारतीय लोगों को गुलामी का पाठ पढ़ाने वाले ये साहित्यकार दूरदर्शी नहीं हैं। जिन साहित्यकारों को भारतभूमि से प्यार है, वे साहित्य के युग परिवर्तन की भूमिका से अवगत हैं, वे साहित्य के माध्यम से जनता का सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

अभ्यास कार्य

1. :- लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से क्यों की है?

2. :- 'साहित्य समाज का दर्पण है।' इस प्रचलित धारणा के विरोध में लेखक ने क्या तर्क दिए है।

3. :- दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?

4. :- 'साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नही है वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।' स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

5. :- 'मानव संबंधों से परे साहित्य नहीं है।' - कथन की समीक्षा कीजिए।

6. :- पंद्रहवी-सोलहवीं सदी में हिंदी साहित्य ने मानव जीवन के विकास में क्या भूमिका निभाई?

7. :- साहित्य के 'पाञ्चजन्य' से लेखक का क्या तात्पर्य है? साहित्य का पाञ्चजन्य मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है?

8. :- साहित्यकार के लिए सृष्टा और दृष्टा होना अत्यन्त अनिवार्य है। क्यों और कैसे?

9. :- 'कवि-पुरोहित' के रूप में साहित्यकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

सप्रसंग व्याख्या

1. कवि की यह सृष्टि निराधार .... होने का अवसर ही न आए।

2. साहित्य का पांचजन्य समर भूमि .... जैसे सूर्य के सामने अंधकार।

3. अभी भी मानव-संबंधों .... पराधीनता और पराभव का पाठ पढ़ाते है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

दूसरा देवदास

– ममता कालिया

पाठ-परिचय

'दूसरा देवदास' कहानी ममता कालिया द्वारा रचित युवामन की संवेदना, भावना, विचारगत उथल-पुथल को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। यह कहानी युवा हृदय में पहली आकस्मिक मुलाकात की हलचल, कल्पना और रूमानियत का उदाहरण है। इस कहानी में लेखिका ने स्पष्ट किया है कि प्रेम के लिए किसी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है। वह कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय हो सकता है। लेखिका ने प्रेम को पवित्र और स्थायी स्वरूप का चित्रण किया है।

स्मरणीय बिन्दु

- संध्या के समय हर की पौड़ी पर होने वाली गंगाजी की आरती का दृश्य अत्यंत मनोहरी होता है। हर की पौड़ी पर भक्तों की भीड़ जमा होती है। फूलों के दोने इस समय एक रूपये के बदले दो रूपये के हो जाते है। भक्तों को इससे कोई शिकायत नहीं होती। आरती के समय सहस्र दीप जल उठते है। पंडित अपने आसान से उठ खड़े हो जाते है और हाथ में अंगोछा लपेट कर पांच मंजिली नीलाजंलि को पकड़ते है और आरती शुरू होती है। घंटे-घड़ियाल बजते है। लोग अपनी मनौतियों के दिये लिए हुए फूलों की छोटी-छोटी किश्तियाँ गंगा की लहरों पर तैराते है। गंगा पुत्र दोने में रखा पैसा मुँह से उठा लेता है।

- गंगापुत्र उन गोताखोरों को कहते हैं जो गंगा घाट पर हर समय तैनात रहते है। यदि कोई गंगा में डूबने लगता है तो ये उसे बचा लेते है। इनकी जीविका का साधन लोगों द्वारा अर्पित किया जाने वाला पैसा है। लोग फूल के दोने में पैसे भी रखते है। लोग मनौतियों के साथ अपना दोना गंगा की लहरों पर तैरा देता है। तब गंगापुत्र दोने में से पैसे उठाकर अपने मुँह में रख लेता है। उनका पूरा जीवन गंगा घाट पर ही बीत जाता है। गंगा मैया ही उनका जीवन और आजीविका है। वह बीस-बीस चक्कर लगाकर मुँह भर रेजगारी बटोरता है और बीवी या बहन रेजगारी बेचकर नोट कमाती है।

- संभव यहाँ अपनी नानी के पास आया था। उसने इसी साल एम. ए. पूरा किया था तथा सिविल सर्विसेज प्रतियोगिताओं में बैठने वाला था। माता-पिता की आज्ञानुसार वह हरिद्वार गंगा के दर्शन

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

करने आया था ताकि बेखटके सिविल सेवा में चुन लिया जाए। बहुत देर तक स्नान करने के बाद वह पानी से बाहर आया और पंडे ने उसके माथे पर चंदन तिलक लगाया। जब पुजारी उसकी कलाई-पर कलावा बाँध रहा था तो उसी क्षण एक और दुबली नाजुक सी कलाई पुजारी की तरफ बढ़ आई। पुजारी ने उस पर कलावा बाँध दिया। उस हाथ ने थाली में सवा पाँच रूपए रखे। यह एक लड़की का हाथ था। लड़की को देखकर संभव उसकी और आकर्षित हो गया। जब लड़की ने यह कहा कि अब तो आरती हो चुकी। अब हम कल आरती की बेला आएँगे। तब पुजारी ने लड़की के 'हम' को युगल अर्थ में लेकर आर्शीवाद दिया कि सुखी रहो, फूलों-फलों, जब भी आओ, साथ ही आना, गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।' यह सुनकर लड़की और लड़के को अटपटा लगा। लड़की छिटककर दूर खड़ी हो गई। इसका कारण यह था कि लड़की और लड़का एक दूसरे से अनजान थे और पुजारी ने गलत समझ लिया था कि ये दोनों पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका हैं। पुजारी की इस गलतफहमी के कारण ही वे दोनों एक दूसरे से छिटककर दूर खड़े हो गए।

❑ उस अनजान लड़की के साथ छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन का चैन छीन लिया। वह खाना-पीना तक भूल गया। संभव उन गलियों की ओर चल दिया जिधर वह लड़की गई थी। संभव उसे अपने मन की बात बता देना चाहता था। उसे रात को ठीक से नींद तक नहीं आई। उसकी आँखो में उस लड़की की छवि बसी हुई थी। वह उन प्रश्नों के बारे में सोच रहा था जिन्हें वह उसके मिलने पर करने वाला था। संभव के जीवन में आने वाली यह पहली लड़की थी।

❑ संभव ने जब मंसा देवी के मंदिर में प्रवेश किया था तब सभी लोग अपनी-अपनी मनोकामना पूरी करने हेतु लाल-पीला धागा लेकर गिठान बाँध रहे थे। संभव ने भी धागा लेकर गिठान बाँधी थी और उसे बाँधते समय पारो के विषय में सोचा था कि कितना अच्छा हो कि उसका मेल पारो से हो जाए। अभी कुछ क्षण ही बीते थे कि उसकी भेंट पारों से हो गई। उसने जैसा चाहा था वैसा ही हुआ।

❑ पारो के मन की दशा बड़ी विचित्र हो रही थी। वह सोच रही थी कि यह कैसा संयोग है, इतनी भीड़ होने पर भी जिससे मुलाकात हुई थी, उससे आज भी मुलाकात हो गई। पारों का संभव से इस प्रकार मिलना उसके अंदर गुदगुदी सी पैदा कर रहा था। पारो को लगता है कि यह मनोकामना की गाँठ भी कितनी अनूठी है, कितनी आश्चर्यजनक है! अभी बाँधो अभी फल की प्राप्ति कर लो। वह फूली न समाती थी। वह स्वयं को भाग्यशाली समझ रही थी क्योंकि देवी माँ ने उसकी मनोकामना इतनी जल्दी पूरी कर दी थी।

❑ संभव मन मे पारो से मिलन की मनोकामना पाले हुए था। उसे इस मिलन की आशा तो थी, पर उसकी मनोकामना इतनी जल्दी पूरी होगी, यह निश्चित नहीं था। जब उसने अचानक प्रकट हुई पारो को देखा तो उसने यही सोचा - 'हे ईश्वर! मैंने कब सोचा था कि मनोकामनाा का मौन उद्गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा। यह शुभ परिणाम बहुत ही शीघ्र दिखाई दे भी गया। पारो से उसकी भेंट किसी चमत्कार से कम नहीं थी। उसे उम्मीद से बढ़कर मनोकामना

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

का फल जब प्राप्त हुआ।

- 'दूसरा देवदास' शीर्षक पात्र पर आधारित है। देवदास प्रेम-कहानी का प्रमुख अर्थात् नायक है। यद्यपि इस कहानी में उसका नाम संभव है, पर पारों नाम दोनों में है।

वैसे यहाँ देवदास शब्द को प्रतीकात्मक रूप में लिया। प्राय: देवदास उसे कहा जाता है जो अपनी प्रेमिका को पागलपन की हद तक प्यार करता है। संभव भी पारों को पाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। अत: इस कहानी का शीर्षक दूसरा देवदास ठीक ही हैं। यह सार्थक है।

अभ्यास कार्य

1 :- पाठ के आधार पर हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा जी की आरती या भावपूर्ण वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

2 :- 'गंगा पुत्र के लिए गंगा मैया ही जीविका और जीवन है।' इस कथन के आधार पर गंगा पुत्रों के जीवन परिवेश की चर्चा कीजिए?

3 :- पुजारी ने लड़की के 'हम' को युगल अर्थ में लेकर क्या आर्शीवाद दिया और पुजारी द्वारा आर्शीवाद देने के बाद लड़के और लड़की को अटपटा क्यों लगा?

4 :- उस छोटी-सी मुलाकात ने संभव के मन में जो उथल-पुथल उत्पन्न कर दी, उसका सूक्ष्म विवेचन कीजिए?

5 :- 'पारो बुआ, पारो बुआ इनका नाम है ..... उसे भी मनोकामना का पीला लाल धागा और उसमें पड़ी गिठान का मधुर स्मरण हो आया', कथन के आधार पर कहानी के संकेतपूर्ण आशय पर टिप्पणी लिखिए?

6 :- मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है :- कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

7 :- दूसरा देवदास कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए?

8 :- "हे ईश्वर! उसने कब सोचा था कि मनोकामना का मौन उद्गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा।" स्पष्ट कीजिए?

सप्रसंग व्याख्या

1. आरती से पहले स्नान!.................... गोधूलि बेला है।
2. अभी तक उसके जीवन .... पुजारी के देवालय पर सीधी आँख पड़ें।
3. रोपवे के नाम में कोई धर्माडंबर .... सभी काम बड़ी तत्परता से हो रहे थे।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कुटज

– हजारी प्रसाद द्विवेदी

पाठ-परिचय

कुटज हिमालय पर्वत की ऊँचाई पर सूखी शिलाओं के बीच उगने वाला एक जंगली फूल है, इसी फूल की प्रकृति पर यह निबंध कुटज लिखा गया है। कुटज में न विशेष सौंदर्य है, न सुगंध फिर भी लेखक ने उसमें मानव के लिए एक संदेश पाया है। कुटज में अपराजेय जीवन शक्ति है, स्वावलंबन है, आत्मविश्वास है और विषम परिस्थितियों में भी शान के साथ जीने की क्षमता। वह समान भाव से सभी परिस्थितियों को स्वीकारता है।

स्मरणीय बिन्दु

- पर्वत शोभा निकेतन माने गए है। हिमालय को 'पृथ्वी का मानदंड' कहा जाता है। इसे शिवालिक श्रृंखला भी कहते है। 'शिवालिक' का अर्थ है शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा । यहाँ खड़े पेड़-पौधों की जड़ें काफी गहरी, पैठी रहती है। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते है।

- शिवालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर वृक्ष अलमस्त हैं, किसी का नाम, कुल और शील का नहीं पता। ये अनादिकाल से है। इन्हीं में से एक छोटा सा बहुत ही ठिगना पेड़ है कुटज का। अजीब सी अदा है, मुस्कराता सा जान पड़ता है। लेखक को उसका नाम याद नहीं आता उसे लगता था कि नाम में क्या रखा है। नाम की जरूरत हो तो सौ दिए जा सकते हैं। पर मन नहीं मानता। नाम इसलिए बड़ा नही है कि वह नाम है। वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। नाम उस पद को कहते है जिस पर समाज की मुहर लगी होती है।

- कुटज को गाढ़े का साथी कहा गया है क्योंकि कुटज कठिनाई के समय में काम आया। कालिदास जब रामगिरि पहुँचे तब उन्होनें इसी कुटज का अर्ध्य देकर मेघ की अभ्यर्थना की थी। उस समय उन्हें कोई और फूल नहीं मिला। तब कुटज ने उनके संतृप्त चित्त को सहारा दिया था।

- कुटज का क्या अर्थ है? कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो। 'कुट' घड़े को भी कहते हैं, और घर को भी कहते है। 'कुट' अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण अगस्त्य मुनि भी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

'कुटज' कहे जाते है। एक जरा गलत ढंग की दासी 'कुटनी' कही जाती है। संस्कृत में उसे 'कुट्टनी' कह दिया जाता है।

- कुटज का पौधा लहराता रहता है। वह नाम और रूप दोनों से अपनी अपराजेय जीवनी-शक्ति की घोषणा करता है। वह धधकती लू में भी हरा-भरा बना रहता है। वह कठोर पत्थर के बीच रूके अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना रहता है। वह सूने गिरि कांतार में भी मस्त बना रहता है। वह कठोर पाषाण को भेदकर पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करता है। वह उल्लास में झूमता है। यही उसकी जीवनी शक्ति है। पत्थरों और चट्टानों के बीच उगते हुए अपने जीवन को किसी उद्देश्य के लिए न्यौछावर करने वाला कुटज का यह पौधा दुनिया को संदेश देता है कि यदि जीना चाहते हो तो कठिनाइयों से मत घबराओं और संघर्ष करते रहो। विषम परिस्थितियों में जीना सीखो। आत्मसम्मान के साथ जियो, शान के साथ जिओ। जहाँ से भी संभव हो अपना भोग्य प्राप्त करो।
- कुटज के जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि हर हाल में जिओ और मस्ती के साथ जिओ। अपना आत्मसम्मान बनाए रखो। परोपकार के लिए जिओ। किसी की चापलूसी मत करो। मन पर नियंत्रण रखो। हमें जीवन में किसी भी कीमत पर हार नहीं माननी चाहिए। कुटज स्वार्थ के दायरे से बिल्कुल बाहर है। हमें भी स्वार्थी नही होना चाहिए।
- लेखक ने एक स्थान पर प्रश्न किया है कि कुटज क्या केवल जी रहा है? यह प्रश्न उठाकर लेखक ने मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है मानव जरा भी मुसीबत आने पर दूसरों के द्वार पर भीख माँगने चला जाता है। कुटज का पौंधा दूसरों का द्वार भीख माँगने नहीं जाता। वह बड़ी शान से अपने स्थान पर खड़ा रहता है। सामान्य मानव शक्तिशाली के सामने घुटने टेक देता है। उसमें आत्म विश्वास की कमी है। आज का मानव परमार्थ से दूर हटता चला जा रहा है।
- लेखक का कहना है कि स्वार्थ से बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड शक्ति अवश्य है और वह शक्ति है 'आत्मा'। आत्मा परमात्मा का अंश है और वह सभी में व्याप्त है। व्यक्ति की आत्मा केवल उसी तक सीमित नही है, वह व्यापक है। याज्ञवल्कय आत्मनः का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे व्यक्ति को तब तक पूर्ण सुख का आनन्द नही मिलता जब तक मनुष्य में, अपने में सब और सब में आप - इस प्रकार समष्टि बुद्धि नही आती। अपने आपको दलित द्राक्षा की भांति निचोड़कर जब तक सर्व के लिए न्यौछावर नही कर दिया जाता तब तक 'स्वार्थ' खंड-सत्य है। वह मोह को बढ़ावा देता है। ऐसा व्यक्ति दयनीय कृपण बन जाता है। वह तो स्वार्थ भी नही समझ पाता, परमार्थ तो दूर की बात है।
- 'कुटज' पाठ में बताया गया है कि दुख और सुख तो मन के विकल्प है। वास्तव में सुखी व्यक्ति वह है, जिसका मन वश में है और दुखी वह है जिसका मन परवश है। यहाँ परवश होने का अर्थ है -दूसरों की खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता करना, जी हजूरी करना। इसीलिए सुख और दुख की चिंता किए बिना हमें जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास कार्य

1. :- कुटज को गाढ़े का साथी क्यों कहा जाता है?

2. :- 'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए?

3. :- 'कुट' 'कुटज' और 'कुटनी' शब्दों का विश्लेषण कर उनमें आपसी संबंध स्थापित कीजिए।

4. :- कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय जीवनी-शक्ति की घोषणा करता है?

5. :- 'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए।

6. :- कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

7. :- कुटज क्या केवल जी रहा है - लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

8. :- लेखक क्यों मानता है कि स्वार्थ से भी बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड कोई न कोई शक्ति अवश्य है? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

9. :- 'कुटज' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि दुख और सुख तो मन के विकल्प है।

10. :- पाठ के आधार पर कुटज की विशेषताएँ बताइए।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

क. कभी कभी जो लोग ऊपर से .... अपना भोग्य खींच लाते है।

ख. जीना भी एक कला है .... परमार्थ नहीं है - है केवल प्रचंड स्वार्थ

ग. दुख और सुख तो मन के विकल्प .... उसे वश में कर सका हूँ।

Downloaded from www.studiestoday.com